और रूपा बाई का, ना लगे चित सेवा में ।
वहां से श्रीजीय के, सक बढ़ चली तिन से ॥७०॥

रूपा और राधा बाई का भी बिहारी जी की सेवा में दिल नही लगता था । जब श्री जी ने बिहारी जी का ऐसा निर्दयी व्यवहार देखा तो दिल में संशय आ गया कि बिहारी जी के अन्दर राज जी महाराज की मेहर नहीं है ।

महामति कहे ऐ साथ जी, ए नलिया में मजकूर ।
और भी अजूं बहुत है, सो आगे कहों जहूर ॥७१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह सब वृत्तान्त नलिये का है । अभी और भी कुछ बाकी है । उसका जिक्र करके सुनाता हूं ।

*(प्रकरण २९, चौपाई-१३१७)*

देख नूर चरचा रोसनी, भई बिहारी जी को दिल सक ।
ए तहकीक मसनंद मेरी लेयगा, ए बात बड़ी बुजरक ॥१॥

श्री जी के मुखारबिन्द से जागृत बुद्धि के ज्ञान की चर्चा सुन कर बिहारी जी महाराज समझ गये कि यह बहुत महत्वपूर्ण चर्चा है जिस कारण से मेहराज ठाकुर मेरी गद्दी ले लेंगे तथा कोई भी सुन्दरसाथ मुझे धाम धनी नही मानेगा ।

फेर के बैठे मसलहत करने, जाएगा एकान्त एक ठौर ।
अब क्या करना हमको, चलो ढूंढ काढ़िये साथ और ॥२॥

तब श्री जी और बिहारी जी फिर एक दिन निजानन्द सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार के प्रति विचार-विमर्श करने के लिये एकान्त में बैठे तो श्री जी ने बिहारी जी से पूछा कि अब हमें जागनी के कार्य के लिये क्या करना है । हम दोनों मिलकर सुन्दरसाथ की जागनी के लिये बाहर निकलें ।

तब श्री बिहारी जी यें कह्या, ए राह नही इसलाम ।
जो आपन माया को छोड़ के, कीजे विरक्त का काम ॥३॥

तब बिहारी जी ने उत्तर दिया कि यह हमारे सम्प्रदाय का काम नही है कि हम माया को छोड़कर बाबा बन कर बाहर निकलें । हम तो परमधाम से माया देखने के लिये आये हैं ।

जो इत हलार देस में, रह ना सको तुम ।
तो करो चाकरी कच्छ में, ए सुकन मानो हुकम ॥४॥

तब बिहारी जी ने कहा कि हे मेहराज ठाकुर ! मैं अच्छी तरह जानता हूं कि आप हलार देश में नही रह सकते । मैं यह आपको हुकम देता हूं कि कच्छ में जाकर नौकरी कीजिए और चर्चा सुनानी बिल्कुल बन्द कीजिए ।

Nijanand App

तब श्री जीयें कह्या, मोकों श्री देवचन्द्र जी दई निध ।
तिन से मेरे दिल में आई, वतन की जागृत बुध ॥५॥

तब श्री जी ने साफ-साफ कह दिया कि हे बिहारी जी महाराज ! आज आप भी अच्छी तरह से सुन लीजिए कि मेरे सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने चर्चा कर यह न्यामत मुझे बख्शी है तथा उनकी कृपा से ही परमधाम की जागृत बुद्धि का ज्ञान मेरे हृदय में आया है ।

तिनसे ऐसे राजाओं को, जब देवें प्रमोध हम ।
सो सेवा तुम्हारी करें, चलें तुम्हारे हुकम ॥६॥

उनकी दी हुई उस वाणी की शक्ति से आप मुझे जिन राजाओं की नौकरी करने के लिये कहते हैं, मैं उनको चर्चा सुना कर आपके चरणों की सेवा में खड़ा कर दूंगा और वे आपके हुकम के अनुसार काम करेंगे।

अब तो हम माया को, क्यों ए पकड़ें नाहें ।
रद किये चौदह तबक, हम क्यों काम करे सो जायें ॥७॥

मरते दम तक मैं कभी भी माया का काम करने के लिये माया में नही जाऊंगा । जब मैंने १४ लोकों को ही रद्द करके छोड़ दिया है तो फिर माया के कार्य के लिए मैं उसमें कभी भी नही जाऊंगा ।

सकुण्डल-सकुमार की, थी श्री देवचन्द्र जी नजर ।
वे आवें जब साथ में, लैल मिट होवे फजर ॥८॥

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी की दृष्टि में सदा साकुण्डल तथा साकुमार की जागनी का ही विचार रहता था और मुझको उन्होंने जगाने का काम सौंपा है कि जिस दिन ये दोनों साथ में आ जायेंगी तब इस ब्रह्माण्ड का अज्ञानता रूपी अन्धकार मिट जाएगा और सच्चिदानन्द स्वरूप श्री प्राणनाथ जी, श्री जी साहिब जी की पहचान हो जाएगी । तब यह खेल खत्म होगा और यह ब्रह्मांड अखंड हो जाएगा ।

ताके वास्ते आपन, मिल निकसें बाहिर ।
श्री देवचन्द्र जी को प्रकास, करे सब में जाहिर ॥९॥

इसलिये, हे बिहारी जी ! हम दोनों मिलकर उनके दिये हुए ज्ञान को सबमें जाहिर करें ।

यह जो इष्ट फिरके चले, किया मूल बिना विस्तार ।
अपनी अखण्ड वस्त श्री धाम की, खड़े सिर पर धनी निरधार ॥१०॥

चौदह लोक के जो फिरके पंथ पैड़े हैं उनका कोई मूल अखण्ड स्थान भी नही है तो भी वे लोग दिन-रात अपने धर्म के प्रचार-प्रसार में लगे हैं और इनके भगवान सदा इनसे दूर बैकुण्ठ में रहते हैं । हमारे पास अखण्ड परमधाम का ज्ञान है और हमारे धाम के धनी हमारे सिर पर सदा साथ रहते हैं । वे कभी भी हमसे जुदा हो ही नही सकते ।

Nijanand App

सो विस्तार क्यों न करें, जाको मूल है हक ।
चाहिए लीला परवरदिगार, होय ब्रह्माण्डों पर बुजरक ॥११॥

फिर ऐसी निजानन्द सम्प्रदाय के ज्ञान का विस्तार हम क्यों न करें जिसके मूल अक्षरातीत परमात्मा हैं । यह तो पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द की लीला है जो १४ लोक और बेहद से परे सबसे महान है ।

और तुम दिल में कछुए, संकोच न राखो लगार ।
हम तुम्हें बैठावें अटारी पर, तले हम रहे खबरदार ॥१२॥

और मैं यह स्पष्ट जानता हूं कि आपको इस निजानन्द सम्प्रदाय के बारे में कुछ भी ज्ञान नही है लेकिन इस विषय में आप दिल में संकोच न करें । हम आपको ऊपर अटारी पर धाम धनी ही बना कर बैठाएंगे तथा नीचे हर प्रकार से प्रचार-प्रसार मैं करता रहूंगा ।

चरचा सबसे हम करें, सबको देवें जवाब ।
जब श्री धाम के जोग होय, सो इत आवे लेने सवाब ॥१३॥

आने वाले सब लोगों को चर्चा भी मैं सुनाऊँगा तथा उनके प्रश्नों का उत्तर मैं दूंगा । जब आने वाले नये सुन्दरसाथ को परमधाम की पूरी पहचान हो जायेगी तब वह आपके चरणों में धाम का धनी मान कर आपका आशीर्वाद लेने आयेगा ।

ताको पठाऊं तुम पे, आवे करन दीदार ।
तुमको यों कर सेवहीं, जान के धनी निरधार ॥१४॥

उसको मैं आपके पास केवल दर्शन के लिये ही भेजूंगा तथा वह आपको धाम का धनी ही जानकर सेवा करेगा ।

तब बिहारीजीयें कहया, मेरा निकलना क्यों होय ।
मेरे संग रंगबाई कही, है बड़ी बोझल सोय ॥१५॥

तब बिहारी जी ने उत्तर दिया कि मेरा बाहर निकलना सम्भव नही है क्योंकि मेरे साथ मेरे साले की धर्मपत्नी रंगबाई हैं, जिनको संतान होने वाली है ।

तिनकी महतारी तिन संग, और कुटुम्ब परिवार ।
सो तो निकल ना सके, मेरा क्यों चलना होय तुम लार ॥१६॥

फिर उनकी माताश्री भी उनके साथ हैं तथा मेरा और भी कुटुम्ब परिवार है । सब के सब मेरे साथ नही चल सकते । इसलिए मेरा और तुम्हारा साथ कैसे निभेगा ?

Nijanand App

तिस वास्ते मेरा चलना, होय नहीं क्योंए कर ।
धनी को जो है करना, सो आय जुड़े त्यों ही कर ॥१७॥

इसलिए मेरा तुम्हारे साथ चलना किसी भी तरह सम्भव नही हो सकता । फिर मैं धाम का धनी हूं। जागनी का काम मेरे हाथ है । धनी के हुकम से ही सुन्दरसाथ की जागनी होनी है ।

इन भांत की रदबदल, होत रहे निसदिन ।
मास डेढ़ लगे इहाँ रहे, करे परियान मिल सैंयन ॥१८॥

इस प्रकार श्री जी ४५ दिन तक नलिये में रहे तथा हर रोज प्रचार-प्रसार के विषय में दोनों मिलकर विचार-विमर्श करते रहे ।

और कोई साथी साथ में, किए थे उनों दूर ।
अरज होत रही तिनकी, सो न मान्या मजकूर ॥१९॥

इस बीच में बिहारी जी ने और भी कई सुन्दरसाथ को धर्म से निकाल रखा था । उनके लिए भी श्री जी ने अर्ज (विनती) की लेकिन बिहारी जी ने किसी के भी बारे में एक न मानी ।

रूपा बाई ऊपर, भई बिहारी जी को सक ।
ए सेवा में न आवहीं, दिल में पैठी अनख ॥२०॥

रूपाबाई, जो बिहारी जी की सेवा में नही आती थी, उसके विषय में बिहारी जी के दिल में शक बैठ गया था कि इसके अन्दर परमधाम की आतम नही है, इसलिए बिहारी जी उससे चिढ़ने लगे थे ।

श्री जी के दिल में, ऐसी उपजी आए ।
इत आवेस रहे राज को, मेरा दिल क्योंये न समझाए ॥२१॥

उधर श्री जी के दिल में भी यह संशय हो गया कि बिहारी जी अपने को धाम का धनी तो कहते हैं लेकिन यदि इनके अन्दर धाम के धनी की कुछ भी मेहर होती तो वे ऐसा व्यवहार कभी न करते । मैं कैसे अपने दिल को समझाऊं ?

इत से दोऊ के दिल में, होय चली अन्तराए ।
पर बाहिर जाहिर ना हुई, एक दूजे रखी छिपाए ॥२२॥

इस प्रकार से दोनों के दिलों में एक-दूसरे के प्रति संशय तो बैठ गया किन्तु किसी ने भी इस बात को बाहर नही जाहिर किया बल्कि अपने दिल में छिपाए रखा ।

Nijanand App

श्री जीयें अपना चित्त, समझाय कियो फेर ।
अवगुन उठा सो भान के, फेर सुध किया दूसरी बेर ॥२३॥

फिर कुछ दिनों के पश्चात् श्री जी ने बिहारी जी के प्रति दिल में आई मलीनता को निकाल फेंका और फिर अपने दिल में उनके प्रति गुरू पुत्र का वही भाव ले लिया ।

इहाँ सेती चलके, आये मंडई बन्दर ।
तहाँ साथ सब आये मिले, बाग में लई जागा उतारा कर ॥२४॥

अब नलिये को छोड़ कर मंडई में बिहारी जी और श्री जी एक बाग में आकर बैठे ।

गये बिहारी जी खंभालिये, इहाँ दज्जालें किया सोर ।
मोमिन एक ठौर भये, इनें पहुंचाऊं जोर ॥२५॥

बिहारी जी मंडई से खंभालिये के लिये गये । वहां श्री जी के प्रति उनके दिल में ईर्ष्या होने के कारण राज दरबार में उन्होंने चुगली करा दी कि श्री मेहराज ठाकुर यहां आने वाले हैं । उन्हें पकड़ लेना । इससे इनके सब साथियों को भी जेल में जाना पड़ेगा ।

तब एक सख्स से, कह्या राजा आगे ।
तुम्हारे गांव में श्री मेहेराज, इत आये उतरेंगे ॥२६॥

यह सोच कर बिहारी जी ने राज दरबार के कर्मचारी के द्वारा राजा तक यह बात कहलवा दी कि तुम्हारे राज्य में मेहराज ठाकुर आयेंगे ।

वह रखता था दुसमनी, दिल में असल की ।
तिन चौकी बैठाई सब ठौरों, करी बड़ी हराम खोरी ॥२७॥

खंभालिये का राजा पहले से ही मन में शत्रुताई रखता था क्योंकि श्री मेहराज ठाकुर उनके राज्य से छिप कर निकल गये थे । इसलिये उसने खंभालिये के बन्दरगाह पर चौकी बैठा दी ।

सब साथ चढ़े नाव पर, रहे श्री जी आप एकले ।
जब चढ़ने लगे नाव में, छींक भई तिन समें ॥२८॥

उधर श्री जी के संग जो सुन्दरसाथ थे, वे भी दूसरे दिन चलने के लिये नाव में सवार हुए । केवल श्री जी ही पीछे रह गये । इतने में उन्हें छींक आ गई । हवा का झोंका आने से नाव गहरे पानी में चली गई, इसलिये श्री जी उस पर न चढ़ सके ।

Nijanand App

तब श्री जी पीछे हटे, हम ना चढ़े इस ठाम ।
सकुन मोकों ना भयो, और राह चलें इन काम ॥२९॥

इस कारण से श्री जी पीछे हटे और नाव पर चढ़ न सके । श्री जी ने सोचा कि श्री राज जी का हुकम मेरे लिये नाव में जाने का नही था । इसलिये वे दूसरे मार्ग से चले ।

जब इहाँ से नाव चली, लगा वायु जोर ।
खंभालिये आये पंहुचे, किया दज्जालें बड़ा सोर ॥३०॥

नाव जैसे ही चली तो वायु का वेग जोर से चला और जब नाव खंभालिये आई तो वहां पुलिस की चौकी बैठी थी ।

साथ सब पकड़े गये, उत माहें राज द्वार ।
साथ सूरत का सब था, सो हुआ खबरदार ॥३१॥

पुलिस सबको पकड़कर राजदरबार में ले गई । सूरत के जो चार सुन्दरसाथ थे वे समझ गए कि यह सब कृपा बिहारी जी की हुई है । इसलिए वे सावचेत हो गए ।

बहुत जाप्ता तिन किया, चल्या न कछु लगार ।
खलास किये दूसरे दिन, हुये तरफ धनी निरधार ॥३२॥

पुलिस ने हर प्रकार से छानबीन करते हुए जानकारी लेनी चाही लेकिन उनके हाथ कुछ नहीं लगा। पुलिस ने दूसरे दिन सबको राजदरबार में पेश किया । राजा ने पूछा कि तेजकुंवरी कौन है ? इनके पति कौन हैं ? तब सूरत के चारों सुन्दरसाथ जो ब्राह्मण थे, उन्होंने कहा कि तेजकुंवरी जी हमारी बहन है । इनके पति नलिये में ही है । इनकी सुपुत्री की शादी थी । हम चारों मामा होने के नाते से भात लेकर गए थे, हम अपनी दोहती को ससुराल विदा करके बहन को लेकर अपने घर जा रहे हैं । तब राजा ने तेजकुंवरी जी से कहा कि आप कच्चा भोजन तैयार करें क्योंकि उस समय ब्राह्मण लोग क्षत्रिय के हाथ का कच्चा भोजन नहीं करते थे । तब तेजकुंवरी जी ने कच्चा भोजन तैयार किया । सबने मिलकर आपस में भोजन कर लिया । राजा को दृढ़ता हो गई कि ये सगे भाई-बहन हैं जिनको हम पकड़ना चाहते हैं । वो ये लोग नही हैं इसलिए आदेश किया कि इनको छोड़ दो । इस प्रकार सुन्दरसाथ वहां से बच कर निकले।

महामति कहें ऐ साथ जी, ये नलिये की बीतक ।
अब सूरत की कहों, जो आज्ञा है हक ॥३३॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे साथ जी ! यह नलिये की बीतक है । अब श्री राज जी की कृपा से सूरत में जो बीतक हुई उसे आपसे कहता हूं ।

*(प्रकरण ३०, चौपाई १३५०)*

Nijanand App